[Shri Ugrasen]

and organised way. Almost all the rivers of Nepal go through U.P. and Bihar States and more than seven lakh areas of land comes under floods every year. So my submission is that we must have a planned approach for solving this problem.

Sir, during congress regime, study team used to visit this area for relief works. May I know when this study team is likely to visit this area ?

My other submission is that the office of Ganga Water Commission is at Patna and Calcutta. I wish that its office should be opened at Lucknow also.

There is lot of slit in both the rivers Ganga and Bramputra. My submission is that these should also be got cleaned as was got done in case of Hoogli by using a braziar. I would also like to know when the plans regarding which agreement has been entered with Nepal will be implemented ?

Shri Surjit Singh Barnala: Regarding our agreement with Nepal to built Bhalu Bridge, I may submit that our Prime Minister had been there and we have reached an agreement. The first step is that it has already been decided to constitute a Committee to examine the preliminary issues with regard to execution of Karnali Project. India has nominated its representatives and they are likely to nominate their representatives. It has further been decided to hold a meeting if experts from both side. The detailed project will be made within two years. But the problem in this regard is.

अध्यक्ष महोदय : क्या आप ओर अधिक समय लेंगे?

श्री सुरजीत सिंह बरनाला : हां, मुझे कुछ और अधिक समय लगेगा ।

अध्यक्ष महोदय : फिर इसे आप मध्यान्ह भोजन के बाद जारी रखिएगा । सभा 2 बजे पुन: समवेत होगी ।

इसके पश्चात लोकसभा मध्याह्न भोजन के लिए स्थगित हो गई ।

The Lok Sabha then adjourned for Lunch till fourteen of the clock.

मध्याह्न भोजन के पश्चात लोकसभा 2 बज कर 3 मिनट पर पुन: समवेत हुई ।

The Lok Sabha re-assembled after lunch at Three Minutes past two of the clock.

अध्यक्ष महोदय : इससे पूर्व की मैं कृषि मंत्री को बोलने के लिए कहूं, मैं प्रधान मंत्री से वक्तव्य देने के लिए बुलाता हूं ।

प्रधान मंत्री की बैल्जियम, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमरीका के हाल ही की यात्रा के बारे में वक्तव्य

STATEMENT *RE.* PRIME MINISTER'S VISIT TO BELGIUM, U.K. AND U.S.A.

प्रधान मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : अध्यक्ष महोदय, 5 जून से 17 जून तक की अपनी विदेश यात्रा के विषय में आपकी अनुमति से मैं एक संक्षिप्त वक्तव्य देना चाहूंगा । तेहरान में एक संक्षिप्त तकनीकी पड़ाव के दौरान मैंने ईरान के महामहिम शहनशाह से उनके निमन्त्रण पर भेंट की। बेल्जीयम, यूनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्रियों से और संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति के निमन्त्रण पर मैंने उनके देशों की यात्रा की । मैंने संयुक्त राष्ट्र महासभा के निरस्त्रीकरण संबंधी अधिवेशन में भी भाषण दिया । विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी भी लन्दन में मेरे पास आगए और उसके बाद उन्होंने मेरी सहायता की । **ईरान :**

2. तेहरान में मैंने ईरान के महामहिम शहंशाह के साथ लाभदायक विचार-विमर्श किया और विगत फरवरी में उनकी भारत-यात्रा के बाद की घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में हमने संक्षेप में क्षेत्रीय स्थिति की समीक्षा की । इस विचार-विनिमय से हमारी आपसी सदभावना बड़ी तथा हमारे क्षेत्र की राजनीतिक स्थिरता तथा इस क्षेत्र के राष्ट्रों के बीच आर्थिक सहयोग में हमारी दिलचस्पी और मजबुत हुई । मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इन विषयों पर हम लोगों में बहुत हद तक सहमति रही ।

बेल्जियम :

3. बेल्जीयम की मेरी यह यात्रा 1972 के बाद से राजनीतिक स्तर पर पहली यात्रा थी । बेल्जीयम के साथ हमारी कोई राजनितिक समस्या नहीं है किन्तु बेल्जीयम के प्रधानमंत्री के साथ मेरा विचार–विमर्श बहूत लाभदायक रहा और इसमें हमने यूरोप, एशिया और अफ्रीका की समस्याओं पर बातचीत की । हमने विशेष रूप से जाईर की हाल की घटनाओं पर विचार विनिमय किया और हम इस बात पर सहमत थे कि इस क्षेत्र की सुरक्षा का प्रश्न खुद अफ्रीकियों पर छोड़ दिया जाना चाहिये जिसे वे अफ्रीकी एकता संगठन के मार्गनिदर्शन में पुरा करें । मैं बेल्जीयम के महामहिम नरेश से भी मिला ।

4. ब्रुसेल्स में मैंने यूरोपीय आयोग के अध्यक्ष श्री राय जेन्किन्स से तथा समुदाय के विदेशी मामलों के प्रभारी उपाध्यक्ष श्री डब्ल्यू हैंफरकेम्प से तथा उनके सहयोगियों से भी मैंने उपयोगी बातचीत की । मैंने उनसे कहा कि प्रमुख व्यापारिक साथीदार की हैसियत से हम यूरोपीय आर्थिक समुदाय से यह आशा करते हैं कि वह व्यापार को सुविधाजनक बनाएगा और अल्पकालिक समस्याओं की तार्किकता और प्रतिबन्धनात्मक नीतियों को रोकेगा । इस बात पर सहमति हूई कि युरोपीय आर्थिक समुदाय के साथ हमार समझौते का नवीकरण करने के लिए, क्योंकि यह अगले वर्ष समाप्त होने वाला है, जल्दी ही उच्च स्तर पर बातचीत शुरु होनी चाहिए । यह भी निश्चय हुआ कि क्रमशः ब्रुसेल्स और नई दिल्ली में भारत और युरोपीय आर्थिक समुदाय के लिए उपयुक्त केन्द्र स्थापित किए जाने चाहिए ।

युनाइटेड किंगडम :

5. मैं 6 से 8 जून तक लन्दन में ठहरा । मैंने महामहिम महारानी से भेंट की तथा हमने ब्रिटेन के प्रधान मंत्री श्री जेम्स कैलाहन से अधिकारिक रूप से बातचीत की और श्री वाजपेयी ने उनके ब्रिटिश सहयोगी श्री डेविड ओवन से अलग से बातचीत की । हमने अधिकारिक स्तर पर द्वीपक्षीय बातचीत भी की । मैंने विरोधी पक्ष के तथा कन्जरवेटिव पार्टी की नेता श्रीमती मार्गरेट थैचर से तथा लिबरल पार्टी के नेता डाक्टर डेविड स्टील से भी बातचीत की । ब्रिटेन के हाउस आफ कामन्स में विभिन्न पक्षों के बहूत से संसद सदस्यों से मेरी मुलाकात विशेष रूप से लाभदायक रही । ब्रिटेन की सरकार के साथ अपनी बातचीत में हमने अन्तर्राष्ट्रीय और द्वीपक्षीय हित के मसलों को उठाया और विशेष रूप से दक्षिणी अफ्रीका और उत्तर-दक्षिण की आर्थिक समस्याओं को । हमने इस बात की आवश्यकता पर जोर दिया कि समाधान के किसी भी ऐसे सूत्र से बचा जाना चाहिए जिससे कि इयां स्मिथ को रोडेशिया में किसी एक अथवा दूसरे छल से जातिवादी अल्पसंख्यक शासन को कायम रखने का मौका मिले । हमारे ब्रिटिश सहयोगियों ने हमें इस बात का आश्वासन दिया कि वे आंग्ल–अमरीकी प्रस्तावों के मुख्य सिद्धान्तों को स्वीकार करते हैं और संबंध सभी पक्षों के बीच बातचीत के माध्यम से समाधान खोजने के लिए प्रयत्न करेंगे । हमने दूसरी बातों के साथ-साथ नाभिकीय अस्त्रों के विस्तार-प्रसार को रोकने से संबद्ध 1978 के अधिनियम तथा संयुक्त राष्ट्र के निरस्त्रीकरण संबंधी विशेष अधिवेशन के संदर्भ में नाभिकीय अस्त्रों के फलाव को रोकने के संबद्ध मामलों पर भी विचार विमर्श किया ।

संयुक्त राष्ट्र महासभा निरस्त्रीकरण सम्बन्धी विशेष अधिवेशन ।

6. संयुक्त राष्ट्र महासभा के निस्त्रीकरण सम्बन्धी विशेष अधिवेशन में भारत ने सक्रिय रूप से हिस्सा लिया और 9 जून को महासभा के समक्ष मैंने जो वक्तव्य दिया था उसकी एक प्रति मैं यहां सदन में रख रहा हूं । इस अवसर पर मैंने कहा था कि निरस्त्रीकरण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता पूर्ण होनी चाहिए तथा एक दूसरे के प्रति सन्देह और डर के वातावरण में शक्तियों के सन्तुलन की नीति के माध्यम से आंशिक निरस्त्रीकरण प्राप्त करने का प्रयत्नकरना व्यर्थ होगा । नाभिकीय अस्त्र विस्तार-प्रसार को रोकने की संधि गुणात्मक अथवा परिमाणात्मक रूप से नाभिकीय अस्त्रों की वृद्धि पर काबू पाने में असमर्थ रही है । और मैंने प्रस्ताव किया कि वर्तमान नाभिकीय अस्त्रों के भंडार को उत्तरोत्तर कम करके उन्हें पूरी तरह समाप्त करने के उद्देश्य से विशेष अधिवेशन को नाभिकीय निरस्त्रीकरण में गुणात्मक और परिमाणात्मक परिसीमन और एक समय-बद्ध कार्यक्रम के रूप में पहला कदम उठाना चाहिए और मने परमाणु शक्ति को शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए विकसित करने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का विशेष रूप से उल्लेख करते हूए यह भी कहा कि हमें इस शक्ति का प्रयोग विस्फोट के लिए नहीं करना चाहिए । मैंने व्यापक परमाणु प्रतिबन्ध संधि शीघ्र करने के महत्व पर भी जोर दिया । इस विशेष अधिवेशन के परिणाम यद्यपि हमारी आशाओं के अनुकूल नहीं रहे जिसका कारण यह था कि नाभिकीय सैन्य शक्ति वाले देशों ने कड़ा रूख अपनाया था, फिर भी हम विश्वास करते हैं कि इस अधिवेशन की समाप्ति पर जो अन्तिम दस्तावेज पारित हूआ था उसमें कुछ ठोस तत्व निहित हैं । जो भी हो अभी हमारे सामने इस बात का मौका है कि हम शेष प्रश्नों को महासभा में उठाएं ।

[श्री मोरारजी देसाई]

7. न्यूयार्क में मैंने संयुक्त राष्ट्र के महासचिव डा० कुर्त वाल्धेम से तथा विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष से मुलाकात की।

संयुक्त राज्य अमरीका :

8. मैंने राष्ट्रपति के साथ दो दिन बातचीत की और मैं अमरीकी कांग्रेस के सदस्यों से भी मिला। मैंने विभिन्न वर्गों के प्रतिष्ठित अमरीकियों से भी बातचीत की।

9. मेरी वाशिंगटन यात्रा राष्ट्रपति कार्टर और अमरीकी प्रशासन के साथ मेरी सतत बातचीत का ही एक अंग था। हमारी सभी बातचीत में राष्ट्रपति के जो निस्संकोच हार्दिक और मैत्री पूर्ण दृष्टिकोण अपनाया उससे मैं एक बार फिर प्रभावित हुआ। हम दोनों में आपसी विश्वास की भावना और एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की वास्तविक इच्छा विद्यमान थी। मेरा यह विश्वास है कि यह अमरीका और भारत के बीच परस्पर लाभदायक संबंधों का निर्माण करने के लिए एक मजबूत आधार है ।

10. वाशिंगटन में हमारी चर्चा में द्विपक्षीय और अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों से संबद्ध बहुत से विषय शामिल थे जिनका उल्लेख संयुक्त विज्ञप्ति में किया गया है और जिसकी एक प्रति मैं सदन की मेज पर रख रहा हूं।

11. मैंने इस अवसर का लाभ राष्ट्रपति कार्टर और अन्य व्यक्तियों पर यह प्रभावित करने के लिए उठाया कि अमरीका और सोवियत संघ जैसी दो प्रमुख शक्तियों का दायित्व यह है कि वे नाभिकीय निरस्त्रीकरण के मामले में एक उदाहरण प्रस्तुत करें जो कि एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें नाभिकीय शस्त्रों वाले देश कोई भी महत्वपूर्ण प्रगति करने में असफल रहे हैं। राष्ट्रपति कार्टर ने हमें व्यापक परीक्षण प्रतिबंध सन्धि और सामरिक अस्त्र शस्त्र परिसीमन के बारे में सोवियत संघ के साथ उनकी बातचीत में हो रही प्रगति के बारे में विस्तार से बताया। मैंने यह पाया कि वे इन दोनों क्षेत्रों में शीघ्र करार करने के लिए उत्सुक हैं।

12. निस्संदेह नाभिकीय मामला दोनों देशों के बीच मतभेद का एक महत्वपूर्ण विषय है। राष्ट्रपती कार्टरने नाभिकीय अस्त्रों के फैलाव को रोकने से संबंधित 1978 के अमरीकी अधिनियम के उपबंधों के बारे में बताया, जबकि मैंने यह दुहराया कि हम से यह नहीं कहा जा सकता कि हम उन देशों द्वारा पूर्ण ऐतिहासी प्रतिबंध प्रदान किए जाने की बात को स्वीकार करें जिनके पास स्वयं ही नाभिकीय अस्त्र शस्त्र हैं और जो अपने खुद के नाभिकीय सैन्य प्रतिष्ठानों के लिए ऐतिहासी प्रतिबन्ध स्वीकार नहीं करते। मैंने तर्क दिया कि अमरीकी कानून अपने दायित्वों को एकतरफा तरीके से परिवर्तित करना चाहता है जब कि हमने अपने कानूनों का सख्ती से पालन किया है। मेरे विचार में अमरीका का यह दायित्व है कि यह तारापुर के लिए 1993 तक समृद्ध यूरेनियम की सप्लाई करे और वह अपनी मर्जी से इस सप्लाई को बंद नहीं कर सकता।

13. मैंने सीनेट की विदेश संबंध समति और प्रतिनिधि सदन की समिति के सदस्यों को अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के बारे में अपना दृष्टिकोण बताया। सदन की यह समिति जिसने अपना मत तब तक के लिए रोक रखा था जब तक कि वे मेरी बात न सुन लें, उन्होने अगले ही दिन तारापुर के लिए ईंधन की खेप देने को बहुमत से निर्णय किया। इसके कुछ दिन बाद ही सीनेट की समिति ने भी उसी प्रकार की कार्रवाई की। जैसा कि आप जानते हैं प्रतिनिधि सभा ने 7.6 मीटरी टन समृद्ध यूरेनियम का जहाज लदान करने के राष्ट्रपति कार्टर के कार्यकारी आदेश को अब अनुमोदित कर दिया है।

14. न तो वे और न ही हम यह चाहते हैं कि तारापुर के लिए ईधन की निरंतर सप्लाई के बारे में मतभेदों का गलत अन्दाजा लगाया जाय। लेकिन यह विश्वास करने का कारण है कि हमारी नाभिकीय नीति और नाभिकीय सहयोग के प्रति हमारे दृष्टिकोण को पहले अपेक्षा और व्यापक रूप से अच्छी तरह समझा जा रहा है। इसलिए हम इस बात पर सहमत हो गए हैं कि नाभिकीय मामले पर हम अपनी वार्ता जारी रखेंगे।

15. मैंने राष्ट्रपति कार्टर और वाणिज्य और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधी बातचीत से संबद्ध उनके दो सहयोगियों विकसित देशों में संरक्षणावाद के प्रति बढ़ती हूई प्रवृत्ति को नियंत्रित करने की आवश्यकता पर भी विचार विमर्श किया मैंने सूती वस्त्रों और इंजीनियरी के माल के विषय में हमारे निर्यातकों को संयुक्त राज्य अमरीका में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है उनका भी उल्लेख किया। इस बात पर सहमति थी कि भारत और अमरीका के बीच व्यापार और अन्य आर्थिक आदान प्रदानों का विस्तार करने की पर्याप्त संभावना है। तदनुसार, अमरीका की वाणिज्य मंत्री श्रीमती क्रेप्स इस संभावनाका पता लगाने के लिए इस वर्ष के अन्त में भारत की यात्रा करेगी। मुझे खुशी है कि मेरे विचार विमर्शों के परिणाम स्वरूप संबंद्ध अमरीकी विभाग ने वस्त्रों की खेप के संबंध में जो अभी तक रूकी हूई थी, अपने रवैये में ढील दे दी है।

16. नि संदेह, जहाँ कहीं भी मैं गया वहाँ भारतीय समुदायों के सदस्यों और प्रतिनिधियों से मिला। उनकी संख्या में और उनके व्यवसायों के स्वरूप में वृद्धि हो रही है। इससे जटिल समस्याएं उत्पन्न हो गयी हैं। हम उनका कल्याण चाहते हैं और बहू-जातीय समरसता की ओर उन्मुख उन सभीप्रयत्नों की सराहना करते हैं जिनसे वे मान-मर्यादासे रह सकें। यह स्थिति विदेश में रहने वाले हमारे भारतीय भाइयों से इस बात की अपेक्षा करती है कि वे जहाँ कहा भी हों वहाँ के कानूनों को स्वीकार करें और सहनशक्ति की प्राचीन भारतीय परम्परा को ध्यान में रखते हुए अपने आर्थिक और सामाजिक पर्यावरण के अनुकूल अपने को बना लें। मैंने अपने देशवासियों को सलाह दी कि उन्हें अपने अचरण से अपने आपको भारत के, उनके जन्म के देश के, योग्य सिद्ध करना चाहिए। ब्रिटेन में, आप्रवासी भारतीय समुदाय को जातीय संबंधों के बिगड़ जाने की आशंका थी। मैंने ब्रिटेन के नेताओं का ध्यान इन आशंकाओं की ओर आकृष्ट किया और उन्हें तथा भारतीय समुदायके नेताओं को कहा कि विभिन्न जातीय वर्गों के बीच परस्पर विश्वास और समरसता संवधित करने की आवश्यकता है। इसे सर्वोत्तम मार्ग के रुप में व्यापक रूप से स्वीकार किया गया।

निष्कर्ष :—

17. मुझे उन देशों से, जिनकी मैंने यात्रा की, यह आभास मिला कि भारत में उनकी मित्रतापूर्ण और गहरी अभिरुचि है। वे लोग अंतर्राष्ट्रीय मसलों और वास्तविक गुटनिरपेक्षता के प्रति हमारे निर्माणात्मक दृष्टिकोण की बहुत सराहना करते हैं। गणतांत्रिक मानदण्डों और व्यक्तिक स्वतंत्रता को पुन: प्राप्त करने और उसकी रक्षा करने के हमारे उपायों की बहुत प्रसंशा हुई है। आर्थिक विकास के हमारे प्रयत्नों, जिनमे कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है, उस सब अवगत हैं और वे इस दिशा में हमारे प्रयासों की सराहना करते हैं। आत्मनिर्भरता को प्राप्त करने की हमारी इच्छा पर भी समझ-बूझ के साथ विचार किया गया है। हमारी विदेश नीति की नई दिशा को भी समझा गया है और उसकी सराहना की गई है। बहूत स नेताओं ने पश्चिमी एशिया के सुधरे हूए वातावरण के लिये हमें बधाई दी और वे चाहते हैं कि ऐसा वातावरण हमेशा रहे तथा यह और सुदृढ़ हो। सदन इस ओर से पूरी तरह सन्तुष्ट हो सकता है कि इस समस्या-पूर्ण विश्व में भारत का स्थान ऊंचा है और संसार यह चाहता है कि भारत में स्थायित्व बढ़े और यह भी कि घर और बाहर दोनों ही जगह भारत अपने चुने हूए रास्तों पर चले।

श्री वसंत साठे (अकोला) : मैं स्पष्टीकरण के लिए प्रधान मंत्री से केवल एक प्रश्न पूछना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : उसके किए मैं फिर कभी समय निकालूगा। **(व्यवधान)**

श्री बी० पी० उन्नीकृष्णन् (बडागर) : मैं भी कुछ स्पष्टीकरण चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : हम कुछ समय निकालने का प्रयत्न करेंगे। कल ही कार्य मंत्रणा समिति ने इस मामले पर विचार किया था। शीघ्र ही विदेश मंत्री बेलग्रेड जाने वाले है जहां कि विदेशी मंत्रियों की बैठक हो रही है। उनके लोटने पर, इस विषय पर चर्चा की जायेगी। श्रीमती पार्वती कृष्णन्।

श्रीमती पार्वती कृष्णन् (कोयम्बटूर) : मैं उस खेड़े में गई थी जहां श्री नायर भूख हड़ताल पर हैं। मैंने उन्हें सरकार के न्यायाधिक जांच करवाने के निर्णय के बारे में प्रधानमंत्री द्वारा दिये गये वक्तव्य के बारे में बता दिया है। सदन में आज प्रात:काल जो भावनाओं व्यक्त की गई थी, उनके बारे में सभी मैंने उन्हें बता दिया था। श्री नायर ने प्रधानमंत्री द्वारा मामले में तत्परता दिखाये जाने का स्वागत किया है। उन्होंने सभा द्वारा समर्थन किये जाने का स्वागत करते हूये, भूखहड़ताल समाप्त करने का निर्णय किया है।

अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की और ध्यान दिलाना—जारी

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE—Contd.

उत्तर प्रदेश आसाम और बिहार में बाढ़

कृषि और सिंचाई मंत्री (श्री सुरजीत सिंह बरनाला) : माननीय सदस्य द्वारा पूछे गये प्रश्न का मैं उत्तर दे चका हूं।

The second question is about sending a study team. The study teams are send only in those states, which are affected by floods.

[**[उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]** MR. DEPUTY SPEAKER IN THE CHAIR]